कागभुसुंडी रामायण

नाथ कृतारथ भवउँ मैं तव दरसन खगराज ।
आयसु देहु सो करौं अब प्रभु आयहु केहि काज ॥

सदा कृतारथ रुप तुम्ह कह मृदु बचन खगेस ।
जेहि कै अस्तुति सादर निज मुख कीन्हि महेस ॥

सुनहु तात जेहि कारन आयउँ ।
सो सब भयउ दरस तव पायउँ ॥

देखि परम पावन पव आश्रम ।
गयउ मोह संसय नाना भ्रम ॥

अब श्रीराम कथा अति पावनि ।
सदा सुखद दुख पुंज नसावनि ॥

सादर तात सुनावहु मोही ।
बार बार बिनवउँ प्रभु तोही ॥

सुनत गरुड कै गिरा बिनीता ।
सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता ॥

भयउ तासु मन परम उछाहा ।
लाग कहै रघुपति गुन गाहा ॥

प्रथमहिं अति अनुराग भवानी ।
राम चरित सर कहेसि बखानी ॥

पुनि नारद कर मोह अपारा ।
कहेसि बहुरि रावन अवतारा ॥

प्रभु अवतार कथा पुनि गाई ।
तब सिसु चरित कहेसि मन लाई ॥

बालचरित कहि बिबिधि बिधि मन महँ परम उछाह ।
रिषि आगवन कहेसि पुनि श्री रघुबीर बिबाह ॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा ।
पुनि नृप बचन राज रस भंगा ॥

पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा ।
कहेसि राम लछिमन संबादा ॥

बिपिन गवन केवट अनुरागा ।
सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥

बालमीक प्रभु मिलन बखाना ।
चित्रकूट जिमि बसे भगवाना ॥

सचिवागमन नगर नृप मरना ।
भरतागवन प्रेम बहु बरना ॥

करि नृप क्रिया संग पुरबासी ।
भरत गए जहँ प्रभु सुखरासी ॥

पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाए ।
लै पादुका अवधपुर आए ॥

भरत रहनि सुरपति सुत करनी ।
प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी ॥

कहि बिराध बध जेहि बिधि देह तजी सरभंग ।
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग ॥

कहि दंडक बन पावनताई ।
गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई ॥

पुनि प्रभु पंचवटीं कृत बासा ।
भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा ॥

पुनि लछिमन उपदेस अनूपा ।
सूपनखा जिमि कीन्हि कुरुपा ॥

खर दूषन बध बहुरि बखाना।
जिमि सब मरमु दसानन जाना॥

दसकंधर मारीच बतकही।
जेहि बिधि भई सो सब तेहिं कही॥

पुनि माया सीता कर हरना।
श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना॥

पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्ही।
बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही॥

बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा।
जेहि बिधि गए सरोवर तीरा॥

प्रभु नारद संबाद कहि मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग॥

कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रबरषन बास।
बरनन बर्षा सरद राम रोष कपि त्रास॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए।
सीता खोज सकल दिसि धाए॥

बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भाँति।
कपिन्ह बहोरि मिला संपाती॥

सुनि सब कथा समीरकुमारा।
नाघत भयउ पयोधि अपारा॥

लंकाँ कपि प्रबेस जिमि कीन्हा।
पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा॥

बन उजारि रावनहि प्रबोधी।
पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी॥

आए कपि सब जहँ रघुराई।
बैदेही की कुसुल सुनाई॥

सेन समेति जथा रघुबीरा।
उतरे झाई बारिनिधि तीरा॥

मिला बिभीषन जेहि बिधि आई।
सागर निग्रह कथा सुनाई॥

सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार।
गयउ बसीठी बीरबर जेहि बिधि बालिकुमार॥

निसिचर कीस लराई बरनिसि बिबिधि प्रकार।
कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार॥

निसिचर निकर मरन बिधि नाना।
रघुपति रावन समर बखाना॥

रावन बध मंदोदरि सोका।
राज बिभीषन देव असोका॥

सीता रघुपति मिलन बहोरी।
सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी॥

पुनि पुष्पक चढि कपिन्ह समेता।
अवध चले प्रभु कृपा निकेता॥

जेहि बिधि राम नगर निज आए।
बायस बिसद चरित सब गाए॥

कहेसि बहोरि राम अभिषेका।
पुर बरनत नृपनीति अनेका॥

कथा समस्त भुसुंड बखानी।
जो मैं तुम्ह सन कही भवानी॥

सुनि सब राम कथा खगनाहा।
कहन बचन मन परम उछाहा॥

गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित।
भयउ रामपद नेह तव प्रसाद बायस तिलक॥